साम्यवादी भाई अपने ढंग से इस संग्राम में जुटे हुए हैं। इसी मार्ग पर चलकर ही सरमायेदारी व्यवस्था खत्म की जा सकती है या भारत का कोई महापुरुष समन्वय को अपनी पुरानी परम्परा पर चलते हुए कोई और मार्ग निकालेगा या अब से पहले कोई और मार्ग हमारे सामने आ चुका है इन बातों पर गहराई से विचार करना है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैं समझता हूँ कि गांधी जी व आचार्य विनोबा जी ने हमें समन्वय के इस मार्ग को दर्शाया है। परन्त पड़ाव को मंजिल समझने वाले और स्वार्थी नेताओं की सहायता से भारत के सरमायेदारों ने इस मार्ग को सफल नहीं होने दिया। अपने धन को घरोड़ (ट्रस्ट) नहीं समझा और न घरेलू और छोटे धन्धों को पनपने दिया। जो वस्तु हाथ से घरों में या छोटी मशीनों से पैदा की जा सकती है, उन्हें बड़े कारखानों द्वारा पैदा करने से रोकने की नीति को नहीं चलने दिया। फलस्वरूप सरमायेदारी व्यवस्था दिन प्रतिदिन मजबूत होती जा रही है और बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, मंहगाई और ऊंच नीच का फर्क जैसी समस्यायें भयानक रूप धारण करती जा रही हैं। मेरा यकीन है कि बिना अहिंसक संघर्ष और कुर्बानी के भारत की सरमायेदारी व्यवस्था को नहीं बदला जा सकता। इस लिये मैं सभी देश वासियों और विशेषकर नौजवानों से अपील करता हूं कि वे उक्त बातों पर गहराई से विचार करें और सामाजिक व आर्थिक स्वतन्त्रता की मंजिल पर पहुँचने के लिए त्याग के मार्ग पर चलने के लिए कमर कस लें।

सरमायेदर भाइयों से भी मैं अपील करता हूं कि वो गांधी जी और आचार्य बिनोबा जी के विचारों को समझें। देश एक खतरनाक मोड़ पर खड़ा है। प्रतिक्रियावादी शक्तियों का सहारा लेते रहे तो हो सकता है कि देश को शान्तिमय क्रान्ति के बजाय खूनी क्रांति से गुजरना पड़े। उन्हें और सभी बुद्धिजीवियों को सरहदी गांधी (आज के महापुरुष) ने जो चेतावनी अभी भारत आने पर दी है, उसे नहीं भूलना चाहिए।

रोहतक में आयोजित हरियाणा के बुद्धिजीवियों की पहली कन्वैन्शन में 9 अक्तूबर, 84 को बाबू जी द्वारा दिया गया भाषण

प्रिय मित्रों,

हरियाणे के बुद्धिजीवियों की इस पहली कनवेन्शन में शामिल होने वाले आप सभी मित्रों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। मैं आप का बहुत आभारी हूं, कि आपने मुझे इस कनवेन्शन का अध्यक्ष चुना। मैं जानता हूं कि मुझ से बहुत अधिक बुद्धिमान और अनुभवी मित्र हरियाणे में मौजूद हैं फिर भी आप ने मुझ पर ये जिम्मेवारी डाली। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि वो मुझे इस जिम्मेवारी को निभाने की शक्ति दे।

2. अपनी बात कहने से पहले आप सभी मित्रों को बधाई देना चाहता हूं कि आपने इस कनवैन्शन की जरूरत को महसूस किया और हरियाणे के सभी जिलों से प्रतिनिधी उस में शामिल हुए। विशेष कर मैं श्री रघुवीर सिंह हूडा का धन्यवादी हूं कि उन्हींने मुझे भी प्रेरणा दी जिसके फलस्वरूप मैं वकील मित्रों के कुरुक्षेत्र सम्मेलन में शामिल हुआ। जहां यह निर्णय हुआ कि न केवल वकील भाईयों को किन्तु अन्य वर्गों—युनिवर्सिटी व स्कूल अध्यापक, डाक्टर इन्जीनियर व अन्य बुद्धिजीवियों की बड़ी कनवैन्शन रोहतक में बुलाई जाए इसीलिये इस कनवैन्शन में शामिल होने के लिए आपको पत्र लिखे।

3. श्री रघुवीर सिंह हुडा और मैंने साल 1975-77 की अमरजैन्सी के दौरान नजरबन्दी का कुछ समय इकट्ठे जेल में व्यतीत किया। उस समय के सम्पर्क और आपसी बातचीत के कारण मैं उनसे बहुत प्रभावित हूं। कुरुक्षेत्र कनवैन्शन में शामिल होने के लिये उनके पत्र का मैंने जवाब दिया कि परिस्थिति अति गम्भीर है। ऐसी कनवैन्शनों से क्या लाभ होगा? यह तो ऐसा ही प्रयत्न होगा जैसे किसी मकान को गर्म पानी से जलाने का प्रयत्न हो। मेरे पत्र का श्री रघुवीर सिंह हुडा जी ने निम्न जवाब दिया। (अंग्रेजी में), मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि हम हरियाणा निवासियों के सामने भी इतिहास की चुनौती है। भारत के आसमान पर कभी कोई खतरनाक परिस्थिति उत्पन्न हुई तो हमने बौधिक दृष्टि से उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। यदि हम अपने प्रान्त के बुद्धिजीवियों को यह एहसास करा सकें कि राष्ट्रीय एकता को बहुत बड़ा खतरा पैदा हो गया है और देश के बुद्धिजीवी वर्ग (हरियाणे का बुद्धिजीवी वर्ग जिसका एक हिस्सा है) को इस चुनौती का मुकाबला करना चाहिए। तो फिर हमारा कर्तव्य है कि उसके लिये प्रयत्न करें और मैं अपनी ओर से इस काम को करने योग्य मानता हूं"।

4. इस पत्र के मिलने पर मैंने कुरुक्षेत्र कनवैन्शन में शामिल होने का निर्णय कर लिया। दो-ढाई साल पहले मैंने हरियाणे के सैकड़ों बुद्धिजीवी मित्रों और नेताओं को पत्र लिखें थे कि "World council for Sikh affairs" की भान्ति हरियाणे के बुद्धिजीवियों की भी ऐसी कौंसल बनानी चाहिए। कुछ मित्रों ने इसका स्वागत किया और कुछ ने निराशाजनक जवाब दिये। परन्तु मामला बीच में ही रह गया। आज की कनवैन्शन में आप निर्णय करें तो हरियाणे के भविष्य में महत्वपूर्ण प्रश्नों पर अपनी जांच पड़ताल के बाद अपना मत निश्चित करने और उसे जनता में ले जाने के लिये हरियाणे के बुद्धिजीवियों की ऐसी कौंसील मनोनीत की जा सकती है। और मेरी राय में ऐसा स्थाई संगठन बनाना चाहिये।

5. दुर्भाग्य तो यह है कि हरियाणे में राजनैतिक पार्टीयां भी देश के जवलन्त प्रश्नों पर बहुत कम अपनी प्रतिक्रिया देती हैं। बुद्धिजीवी वर्ग तो प्रायः उदासीन रहता है। हरियाणे का अलग राज्य बनाने में किन महानुभावों ने काम किया, क्यों किया, किसने विरोध किया, क्यों किया, यह बातें हरियाणे का बुद्धिजीवी जानता और जनता के सामने रखता, तो जिन लोगों ने हरियाणा प्रान्त का खुलम-खुला विरोध किया, वो तुरन्त पश्चात हरियाणे के मुख्यमन्त्री नहीं बन सकते थे। हरियाणा बनने की खुशी में हम पहली नवम्बर को छुट्टी मनाते हैं; तो जिन नेताओं ने हरियाणा बनते समय हर प्रकार के रोड़े अटकाये वो कैसे हमारे सम्मान के पात्र हो सकते हैं। इसी प्रकार रावी, सतलुज नदियों के पानी का झगड़ा है। चण्डीगढ़ और अबोहर फाजिल्का का मामला है। जिस सिक्ख कौन्सल की मैंने ऊपर चर्चा की है उसने बहुत

downloaded from moorchandjain.org

परिश्रम करके पानी के झगड़े पर एक पुस्तिका तैयार की। हरियाणा सरकार की ओर से थोड़ा बहुत इसका जवाब दिया गया परन्तु हरियाणा बुद्धिजीवियों की ओर से कोई जवाब नहीं दिया गया। ऐसे सभी प्रश्नों का हरियाणे के भविष्य से गहरा सम्बन्ध है।

6. पिछले ढाई-तीन साल से "धर्मयुद्ध" के नाम पर अकाली पार्टी ने कुछ मांगे लेकर मोर्चा लगाया। उन मांगों में से जिनका अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है, हरियाणे के भविष्य से गहरा सम्बन्ध है। इन मांगों की आड़ में पंजाब में कितने शर्मनाक कत्ल हुए, बैंक लूटे गये। उग्रवादियों ने न केवल हिन्दुओं को कत्ल किया किन्तु ऐसे सिक्खों को भी जिन्हें अपने रास्ते में रुकावट समझते थे। फौजी कार्यवाही से पहले केन्द्रीय सरकार विरोधी पक्षों की सहायता के बावजूद भी समझौता नहीं कर सकी। कैसे भिण्डरा वाला और उसके साथियों का फिरकेदाराना प्रचार बढ़ता गया और कैसे भिण्डरावाला को केन्द्रीय सरकार की ओर से ही प्रोत्साहन मिलता रहा? ये सभी बातें आपके सामने है। फौजी कार्यवाही के पश्चात हालत ये है कि राष्ट्रीय यकजहती व एकता और देश में फिरकेदाराना भाईचारे को बहुत बड़ा खतरा पैदा हो गया है।

7. यह कनवैन्शन इसलिये बुलाई गई कि हरियाणे के बुद्धिजीवी वर्ग की देश के लिये जीवन और मौत के इस प्रश्न पर कोई प्रति-क्रिया है या हमने आख मीचने का निर्णय कर लिया है, कि जो कुछ कोई और करेगा हम उसको मानते रहेंगे। मैं समझता हूं कि आंख मीचने का रवैया हरियाणे के विकास के लिये तो घातक है ही, देश के लिये उससे भी ज्यादा घातक है।

8. राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारा अगला लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। आर्थिक और सामाजिक स्वतन्त्रता का कोई अर्थ है तो ये कि कोई देशवासी आर्थिक और सामाजिक तौर पर किसी और देशवासी के अधीन न रहे। सत्ताधारी वर्ग ने इसीलिये समाजवाद और गरीबी हटाओ का नारा लगाया। समाजवाद तो कहां सफल होना था, आज देश की अखण्डता और एकता को ही खतरा हो गया है। समाजवाद की क्रांति क्यों फेल हुई? गरीबी और बेरोजगारी क्यों बढ़ती जा रही है? इसके कारण छुपाये जा रहे हैं। क्रान्तिकारी महान नेता लेनिन के शब्दों में क्रान्ति का फेल होना अपराध नहीं परन्तु क्रान्ति क्यों फल हुई उन वजुहात को छुपाना बड़ा भारी अपराध है।

9. सत्ताधारी वर्ग का यह प्रयत्न स्वाभाविक है कि सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति क्यों फेल हुई और क्यों राष्ट्र की एकता को खतरा हुआ, वह उसकी वजुहात को छुपाए। परन्तु बुद्धिजीवी वर्ग भी उन वजुहात को स्पष्ट न करे और उनके बारे में उदासीन रहे तो क्या यह नहीं समझा जाएगा कि बुद्धिजीवी वर्ग भी स्वार्थी सत्ताधारी वर्ग का ही एक भाग बन गया है। और अपने कर्तव्य के पालन में फेल हो गया है। महत्वपूर्ण प्रश्नों पर बुद्धिजीवी वर्ग जब विचार करना और अपनी प्रतिक्रिया देना बन्द कर देता है तो उसका एक और दुष्परिणाम होता है और वो यह कि धीरे-धीरे बुद्धिजीवी वर्ग बुद्धिजीवी नहीं रहता केवल भोगी जीवी बन जाता है। उनकी सोचने की शक्ति धीरे-धीरे मन्द पड़ जाती है। Self clarification की प्रक्रिया व गति बिल्कुल रुक जाती है। भूतकाल में किसी आन्दोलन की सफलता और असफलता के बारे में बुद्धिजीवी वर्ग अपना कोई मत ही न बना सके तो भविष्य के लिए भी किसी लाभदायक प्रोग्राम बनाने के अयोग्य हो जाता है। यह कनवैन्शन इसलिए बुलाई गई है कि हरियाणे के बुद्धिजीवियों को इस खतरे से सावधान करें ताकि वो देश में हो रही घटनाओं और आन्दोलनों पर अपना मत बना सकें।

10. देश की राजनैतिक एकता के तीन स्तम्भ हैं। (1) राज प्रणाली का फेडरल ढांचा (2) धर्मनिर्पेक्षता (3) विश्व में कहीं भी साम्राज्यवाद हो उसकी विरोधता।

11. जहां तक फैडरेलिज्म का सम्बन्ध है हमारे संविधान में इसे स्वीकार किया है। यह किसी व्यक्ति या राजनैतिक पार्टी की बुद्धि की उपज नही किन्तु राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का एक भाग है। मुक्ति आन्दोलन को मजबूत करने के लिये ही देश के भिन्न-भिन्न भागों में रहने वाले लोगों को यकीन दिलाया गया था, कि देश आजाद होने पर भाषाई आधार पर नये प्रान्त बनेंगे और उन प्रान्तों के काफी अधिकार होंगे। ताकि एक भाग में बसने वालों को यह खदशा न हो कि दूसरे भाग में बसने वाले बहुमत के लो उनका शोषण कर सकें। इसलिये हमारा फैडर ढांचा हमारी राजनैतिक एकता की आवश्यकता है। परन्तु स्वतन्त्रता मिलने के बाद इस को हाड़-मांस देने की बजाय कुचलने की कोशिश की गई। हमें समझना होगा कि फैडरेलिज्म के विचार पर कोई हमला होता है तो वो राष्ट्रीय एकता पर हमला है। केन्द्रीय सरकार प्रान्तीय हकूमतों के अधिकारों को इरोड करती हैं तो यह हमला भारतीय यकजहती को इरोड करना है हरियाणे में मई 1982 के चुनाव के पश्चात बहुमत की सरकार को बनाए अल्पमत की सरकार बनने दी गई ताकि विधायकों को खरीदा जा सके। सिक्कम के छोटे प्रदेश में श्री भण्डारी की बहुमत सरकार को हटा कर दूसरी सरकार बनाई गई। 30 विधायकों को

सिक्कम विधान सभा में जब 17 विधायकों को लेकर श्री भण्डारी दिल्ली पहुंचे तो उसे मुख्य मंत्री न बना कर गवर्नरी राज्य कायम कर दिया गया। जम्मू काश्मीर में विधान सभा की बजाय बहुमत की गिनती गवर्नर हाऊस में की गई और इसी प्रकार आन्ध्र प्रदेश में हुआ। यदि सारा राष्ट्र श्री रामा राव की हिमायत एक जुट होकर न करता तो आन्ध्र प्रदेश में भी वही होता। सत्ताधारी पार्टी की ओर से यह हमले भारतीय 'इन्टाग्रीटी' पर हमले हैं। इन हमलों को हम न समझ सकें (और समझेंगे नहीं तो रोकेंगे कैसे) तो निराश होकर देश वासियों में जुदागाना भावना भड़के, तो दोष उन हमला करने वालों का है न कि देश के किसी भाग की जनता का। वर्तमान परिस्थिति के इस स्वरूप को हम भूलेंगे या नजरअन्दाज करेंगे, तो हम राष्ट्रीय एकता की सुरक्षा कभी न कर सकेंगे।

12. राष्ट्रीय एकता को खतरे का दूसरा बड़ा कारण हमारी पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था है। विज्ञान और टेकनालोजी ने मानव को अथाह शक्ति दे दी है। उस शक्ति का लाभ उठा कर बड़े कारखानेदारों ने करोड़ों नौजवानों को बेरोजगार कर दिया है। अमरीका, फ्रान्स और बर्तानिया जैसे पूंजीवादी देशों में बेरोजगार नौजवानों को घर बैठे भत्ता मिलता है। समाजवादी देशों में कोई नौजवान बेरोजगार नहीं रह सकता। हमारा देश ही ऐसा है कि जहां इन करोड़ों नौजवानों के न रोजगार देने का प्रबन्ध है न ही उन्हें उचित भत्ता दिये जाने की आर्थिक क्षमता है। इसी का परिणाम है कि आसाम प्रदेश में विदेशी वोटरों को मत-सूची से निकालने और केन्द्रीय सरकार की न निकालने की जिद पर बलुए हुए। हजारों आदमी मारे गये। अरबों रुपये की सम्पति नष्ट हुई। इस प्रकार इस सीमाई प्रान्त में राष्ट्रीय एकता पर कितनी भारी चोट लगी। दो साल पहले गुजरात में मैडिकल कालेजों में भर्ती के आरक्षण के प्रश्न पर किस तरह बलुए हुए। और अब पंजाब में क्या हो रहा है। वहां लगभग 5 लाख पढ़े लिखे नौजवानों के नाम रोजगार दिलाऊ दफ्तरों में दर्ज हैं। उन्हें रोजगार मिलने की कोई आशा नहीं है। स्वाभाविक है कि वो उन लोगों के हाथों में खेलेंगे जो उन्हें अलग स्वतन्त्र देश बनाकर सबको रोजगार मिलने का सब्जबाग दिखाएंगे।

13. पढ़े लिखे बेरोजगारों की समस्या का एक और पहलू है जिसके कारण और बातों के इलावा भारत के कामर्शियल वर्ग को नाता आधुनिक भारत की समस्याओं से टूटता जा रहा है। यह पहलू बहुत खतरनाक है। आश्चर्य यह है कि कामर्शियल वर्ग की तेज बुद्धि का ध्यान अभी तक इस ओर नहीं गया है। इस वर्ग से आए इस सम्मेलन में बुद्धिजीवी मेरी इस बात से सहमत होंगे की उनके नौजवानों को बेरोजगारी की समस्या इतनी भयानक नहीं जितनी किसानों, पिछड़ी जातियों और हरिजनों के नौजवानों के लिए है। कामर्शियल वर्ग के नौजवान सरकारी नौकरी, इन्जिनियरी, डाक्टरी, वकालत और बैंकों व बीमा कम्पनी की सर्विस में बाकी सब वर्गों से बहुत आगे हैं। वहां न भी आ सकें तो कोई न कोई दुकान खोल कर अपने परिवार का भरण पोषण कर लेते हैं। क्यों कि उन्हें उसका अनुभव है। अन्य वर्ग से आए नौजवान क्या करें? नौकरियों में कर्मशियल वर्ग के नौजवानों से पिछड़ जाते हैं। दुकान व तिजारत का उन्हें अनुभव नहीं। धीरे-धीरे इसका परिणाम यह हो रहा है कि व्यापारी वर्ग 'स्टेटसको' का हिमायती बनता जा रहा है परन्तु दूसरे वर्ग के नौजवानों की समस्याओं का समाधान तो सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति बिना नहीं हो सकता। हरियाणे के बुद्धिजीवी मित्रों से खास-तौर पर व्यापारी वर्ग से आये बुद्धिजीवियों से मेरा अनुरोध है कि वो इस उभरती समस्या के सामाजिक परिणामों का गहराई से विचार करें। वो कैसे देर तक 'आईवरी टावर' में रह सकेंगे। उत्तर प्रदेश और कई अन्य प्रदेशों में लूटमार और अमन के खतरे की अवस्था इसी समस्या का परिणाम है।

14. आर्थिक समस्याओं का सरकार समाधान न कर सकी तो सत्ता में रहने के लिये जनता में फिरकेदाराना, इलाकाई व भाषाई प्रश्नों को उठाने वाले तत्वों को उभारती है और जब यह काबू से बाहर होकर राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा बन जाते हैं, तो फौज का सहारा लेकर राष्ट्रीय एकता के रक्षक होकर हीरो बन जाने का खेल खेला जाता है।

15. प्रश्न यह है कि जुम्मेवार कौन है? वो व्यक्ति या राजनैतिक दल जिसने राज्यों के अधिकारों को इरोड किया, बेरोजगारों की भयानक समस्या की ओर ध्यान नहीं दिया। भ्रष्टाचार और अमीर गरीब की खाई को इतना बढ़ने दिया जो पहले कभी नहीं थी? या वो लोग है जो बेरोजगारी और फिरकाप्रस्त ताकतों का शिकार हैं।

16. देश के भीतर ही इन देश द्रोही तत्वों से लड़ना होगा। जो उन्हें प्रोत्साहन दे रहे हैं उन्हें पहचान कर नंगा करना होगा। स्कूल और कालेजों मे नैतिक शिक्षा क्यों नहीं दी जा रही? चुनाव सम्बन्धी कानून को क्यों नहीं संशोधित किया जा रहा? राजनैतिक भ्रष्टाचार को रोकने के लिए केन्द्रीय लोकायुक्त क्यों नहीं बनाया जा रहा? डिफैक्शन के विरुद्ध कानून क्यों नहीं बनाया जा रहा? यह सब बातें समझनी होंगी।

downloaded from moolchandani.org

17. इसके इलावा बुद्धिजीवियों को राष्ट्रीय कमजोरियों की ओर भी ध्यान देना होगा। मेरी राय में हमारी राष्ट्रीय कमजोरियां निम्न है :—

क) भूतकाल में भारतीय ज्ञान को, ज्ञान की चरम सीमा समझना। यदि कोई भारतीय ऐसा माने तो फिर वर्तमान या भविष्य में कोई बात सीखने के लिऐ रह ही नहीं जाती। फिर आगे बढ़ने की तो कोई गुंजाईश रहती नहीं। नदी में बहते पानी की बजाए उसकी हालत जोहड़ के खड़े पानी जैसी हो जाएगी। यह गल्त धारणा छोड़नी होगी।

ख) भाग्य के आधार पर गरीबी अमीरी को ठीक मानना और यह समझना कि गरीब इसलिए गरीब है कि उसने पिछले जन्म में पाप किये और अमीर इसलिए अमीर है कि उसने पिछले जन्म में पून्य किया। इस खतरनाक विचार का भारत के शोषित लोगों पर भी इतना खराब प्रभाव पड़ा कि वे यह भूल गये कि उनकी गरीबी का कारण समाज के गरीब विरोधी कायदे कानून हैं न कि पिछले जन्म में उनका किया हुआ कोई काम।

ग) हाथ से काम करने वालों से घृणा की भावना।

घ) Hypocracy अर्थात मन में कुछ और वाणी में कुछ और।

ङ) समबुद्धि के स्थान पर स्वार्थ बुद्धि से देश की समस्याओं पर विचार करने की आदत।

मेरा भाषण पहले ही काफी लम्बा हो गया है, मैं चाहता हूं कि इन विषयों पर हरियाणे का बुद्धिजीवी स्थान स्थान पर इन विषयों पर ठोस मत बना कर जनता का मार्ग दर्शन करें।

देश जिस खतरनाक चौराहे पर खड़ा हो गया है उसे बचाने के लिये जरूरी है कि हरियाणे का बुद्धिजीवी भी अपना पूरा योगदान दे। मुझे पूर्ण आशा है कि यह इतिहासिक सम्मेलन इस दिशा में ठोस कार्यक्रम और सगठन का निर्माण करेगा।

आप सब का बहुत-बहुत धन्यवाद।

मूल चन्द जैन
प्रधान, हरियाणा बुद्धिजीवी वर्ग
कनवेनर; रोहतक

बाबू जी द्वारा 4 मार्च, 1984 को सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल प्रधान, शिरोमणी अकाली दल को लिखे गए पत्र के अंश।

आदरणीय सन्त जी,

करनाल

सादर नमस्कार।

बहुत दिनों से आपको पत्र लिखने की इच्छा थी, परन्तु किसी न किसी कारण पत्र नहीं लिख सका। आप एक माने हुए सन्त होने के अलावा इस समय अकाली मोर्चे के सफल डिक्टेटर भी हैं और इस हैसीयत से न केवल पजाब के सिख भाइयों के ही सबसे बड़े नेता हैं, किन्तु भारत के बड़े नेताओं में आपको गिना जाता है। मैं तो हरियाणा का एक साधारण नागरिक हूं, परन्तु सारा जीवन मात्र भूमि की सेवा के लिए थोड़ा बहुत करता रहा हूं। आप शायद मुझे नहीं जानते। लगभग चार साल हुए जब कालांबली में जहरीली शराब काँड हुआ, तो वहां एक सभा में आपसे भेंट हुई थी। उस थोड़े से समय में ही आप के आध्यात्मिक तेज शांत स्वभाव और मीठी वाणी का मुझ पर काफी प्रभाव पड़ा था। वैसे अकाली पार्टी के कुछ अन्य नेतागण सरदार प्रकाश सिह बादल, सरदार बलवन्त सिह, सरदार दारा सिह, वकील हाई कोर्ट और सरदार अजमेर सिह, भूतपूर्व मन्त्री आदि से मेरा काफी सम्बन्ध रहा है।

और बात लिखने से पहले आपको यह बताना मैं जरूरी समझता हुं कि गुरुओं में मेरी अति श्रद्धा है। गुरु नानक जी का नाम में अपनी हर प्रार्थना में जरूर लेता हूं और उनके वो प्रवचन 'निर्वैर, निर्विकार निर्भय" को जब याद करता हूं तो मुझे आत्मिक बल मिलता है। विश्व के भिन्न-2 देशों में बहुत बली अवतार और गुरु पैदा हुए हैं परन्तु ऐसे महापुरुष ऊंगलियों पर गिने जा सकते हैं, जिन्होने पीरी और मीरी का जामा पहनकर जुल्म और अत्याचार के खिलाफ केवल उपदेश ही नहीं दिया किन्तु उस उपदेश पर आचरण करते हुए विश्व भर के इतिहास में न भूला देने वाली कुर्बानियां भी की।

मैं अब तक समझता रहा कि गुरूओं की दी हुई यह विरासत आपकी और मेरी सांझी है। परन्तु सिख भाईयों में कुछ ऐसे सिख पैदा हो गए हैं जो मेरे जैसे, गुरुओं के अनुयायियों से, यह विरासत छिनने में लगे हुये हैं। जिन गुरुओं, और, महाराजा रणजीत सिंह के अन्तिम काल तक, इन अनगणित सिख भाईयों ने हिन्दुओं की रक्षा के लिए अपनी जान तक की बाजी लगा दी, आज उन्हीं गुरुओं के नाम पर कुछ सिख भाई हिन्दुओं को चुन-चुन कर मार रहे हैं। बैंक, पैट्रोलपम्प आदि लूटे जा रहे हैं। आप की ओर से कभी-2 उनकी निन्दा का ब्यान और कभी यह बयान कि सभी कुछ सरकार करा रही है, समाचार पत्रों में पढ़ लेता हूं। परन्तु आप के इन बयानों से हालत सुधरने की बजाये दिन प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे हैं। और जब से आपके नेतृत्व में संविधान की धारा 25 की उपधारा को जलाने का प्रोग्राम चालू हुआ है, तो ऐसा प्रतीत होने लगा है कि हम सब ही गुरुओं की उस महान विरासत को भूला बैठे हैं।

आप शायद कहें कि हरियाणे के लोगों ने भी कई स्थानों पर सिख भाईयों को मारने या उनकी सम्पत्ति लुटने, जलाने या बेइज्जत करने में कसर बाकी नहीं रखी। हरियाणा में जो कुछ 15 और 17-18 फरवरी को हुआ, उसके लिए मेरे जैसे आदमी अति शर्मिन्दा हैं। इन हालत को नारमल बनाने के लिये मैं या मेरे जैसे आदमी जो कर सके, हमने किया। करनाल में रहने वाले किसी भी सिख भाई से आप इस बारे में जानकारी ले सकते हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि जो पंजाब में हो रहा और खास तौर पर जो कुछ14 फरवरी से लेकर अब तक हुआ, है उसके लिये भी कोई शर्मिन्दा है? और उन हालात को नारमल बनाने के लिये कोई ठोस प्रयत्न किया जा रहा है?

सतलुज ब्यास के पानी के बटवारे और चण्डीगढ़, अबोहर-फाजिल्का आदि की समस्या का हरियाणे से गहरा सम्बन्ध है। हरियाणा के प्रतिनिधियों को नजर अन्दाज कर केवल भारत सरकार पर दबाव डालकर आप इन समस्याओं का निर्णय कैसे करा सकते है? चण्डीगढ युनियन टैरिटरी के लोगों को इस प्रजातांत्रिक मार्ग का आपका मोरचा किस आधार पर विरोध करता है कि यहां के निवासियों का जो भारी मत निर्णय करे उसी प्रदेश में इस टैरीटरी को शामिल किया जाये। यही बात अबोहर फाजिल्का के बारे में है। World Council for Sikh Affairs ने सतलुज ब्यास के पानी के बटवारे के बारे में जो पुस्तिका लिखी है, वो मैंने ध्यान से पढी है। बड़ी मेहनत और होशियारी से लिखी हुई इस पुस्तिका में दिये गये अधिकतर तर्क, वादे बेबुनियाद है। मुझे खेद है कि इसमें सिख भाईयों को गलत तौर पर उकसाने और भड़काने की कोशिश की गई है।

यह पत्र बहुत लम्बा हो गया है। इसके लिए आप से क्षमा चाहता हूं और आशा करता हूं कि आप सारी परिस्थिति पर नये ढंग से विचार करेंगें और इस पत्र को, जिस सिपरिट में ये लिखा है, उसी सिपरिट में पढने और उत्तर देने का भी कष्ट करेगें।

सादर।

आपका
मूल चन्द जैन

downloaded from moorchandjain.org